सुनील का सपना

❑ देव प्रसाद यादव

किसी गाँव में सुनील नाम का लड़का रहता था। वह हर रात को सपना देखा करता था। एक रात उसने सपना देखा कि वह एक तालाब में नहाने गया है। पानी में घुसा कि एक मगरमच्छ ने उसके पैर को पकड़कर खींच लिया। उसने निगलने के लिए मुँह खोला कि सुनील का पैर छूट गया।

सुनील तालाब से निकलकर जल्दी-जल्दी कपड़े पहनकर वहाँ से भागा। भागते-भागते अपने गाँव के मैदान में पहुँचा। उस मैदान में एक सर्प था। सर्प को देखकर फिर जंगल की तरफ भागने लगा। उसी जंगल में सिंह था। सिंह बहुत दिन से भूखा था। उसने देखा कि लड़का भागा जा रहा है। सुनील ने देखा कि सिंह मुझे खाने को आ रहा है। फिर वहाँ से भागा। भागते-भागते एक गौशाला पहुँचा। गौशाला में सभी गायें चरने के लिए चली गईं। पर एक गाय वहाँ खडी थी। सुनील गाय के पास पहुँचा और प्रार्थना की, "हे माता मेरे प्राण बचा लो।"

गाय ने सुनील की प्रार्थना स्वीकार कर ली। गाय ने सुनील से कहा, "मैं मेंढक बन जाती हूँ और तुम पेड़ पर चढ़ जाओ। जब सिंह मुझे मारेगा तो तुम हँस देना।"

कुछ देर बाद सिंह वहाँ आया और मेंढक को देखकर खाने के लिए लपका। क्योंकि वह बहुत दिनों से भूखा था। उसने जैसे ही पंजा उठाया कि सुनील हँस पड़ा। सिंह को शरम आ गई, वह लज्जित होकर भाग गया। सुनील पेड़ से उतरा और गाय, मेंढक से फिर गाय बन गई। ●

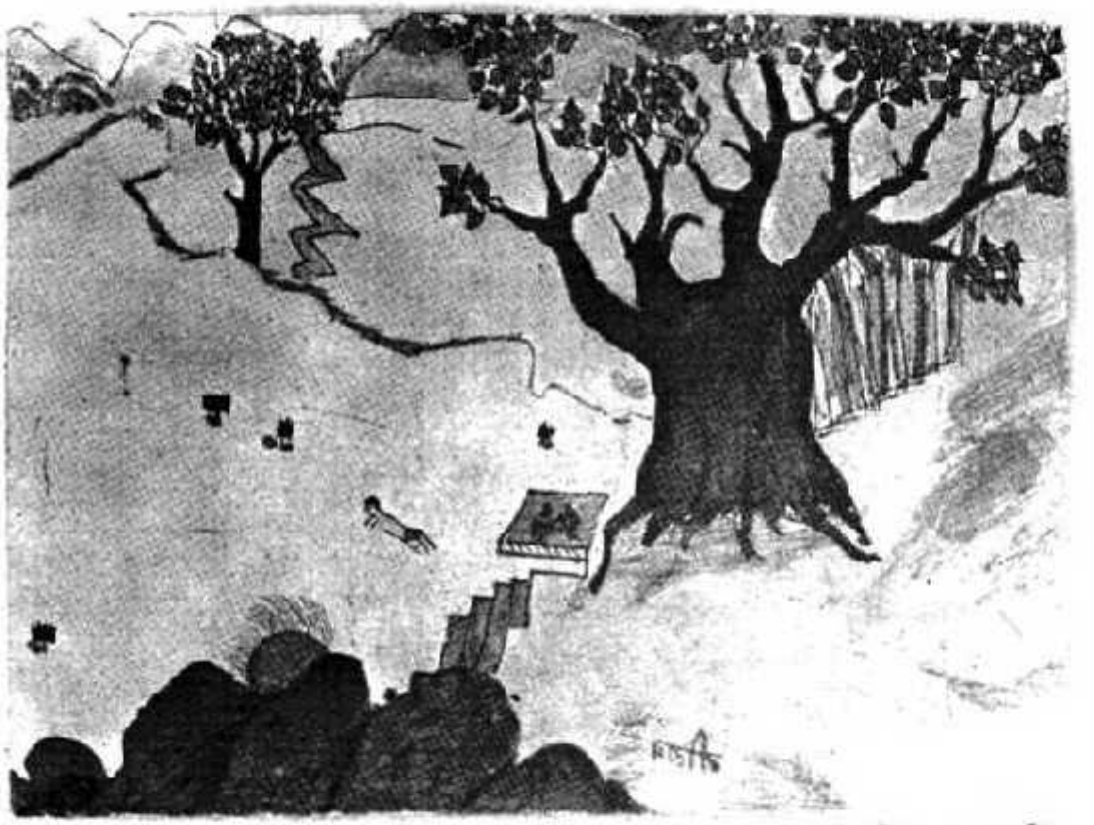

नीलम कुमारी

देवप्रसाद यादव, सातवीं, करही बाजार, रायपुर, म.प्र.। चकमक फ़रवरी, 1990 में प्रकाशित। नीलम कुमारी, गोपालपुर, मुंगेर, बिहार।

रूमाल ने करवाया झगड़ा

❑ अशोक कुमार

मेरे स्कूल में रफ़ीक नाम का एक लड़का पढ़ता है। वह मुझसे बहुत मार-पीट करता है। एक दिन मैं स्कूल में रूमाल ले गया। स्कूल की आधी छुट्टी हुई। सब लड़के खेल रहे थे। रफ़ीक ने मुझसे मेरा रूमाल माँगा। थोड़ी देर बाद मैंने उससे अपना रूमाल माँगा तो उसने देने से इंकार कर दिया।

मैंने उससे कहा, देख सीधे से दे दे वरना मैं मेरे दोस्तों को बुला लाऊँगा तो वे तेरी पीठ सही कर देंगे।

उसने मुझसे कहा, मैं काला नाग हूँ, काला नाग। सामने आ जाए तो मैं अपने बाप को भी डस लूँ फिर तुम क्या चीज़ हो।

मैं अपने सब दोस्तों को बुला लाया वह भागा। मेरे सब दोस्त उसके पीछे दौड़े। काफ़ी दौड़ने के बाद पकड़ में आ गया। मैंने उससे कहा, तू काला नाग है तो ले तेरा बाप सामने खड़ा है, ले डस। उसने मुझको दो छड़ी जमा दी। मेरे दोस्तों ने उसे पकड़ लिया और रूमाल छुड़ा लिया।

उसने मुझसे कहा, कल सबको मज़ा चखा दूँगा। दूसरे दिन वह अपने भाई को बुला लाया। हमने उसके भाई को पूरी बात समझ दी। उसने मुझसे तथा मेरे दोस्तों से कहा कि तुम एक क्लास में पढ़ते हो, अब ऐसा मज़ाक मत करो। मैं तथा मेरे दोस्त अपने घर आ गए।

दूसरे दिन वह मेरे दोस्तों से फिर बोलने लगा और कहा कि मैं अशोक को कभी न कभी ज़रूर मारूँगा। लेकिन उसने

मुझे अभी तक नहीं मारा है।

यह कहानी अभी ख़त्म नहीं हुई है। रफ़ीक ने मुझसे कहा है कि वह मुझे मारेगा। मारेगा या नहीं, यह नवम्बर में पता चलेगा। ●

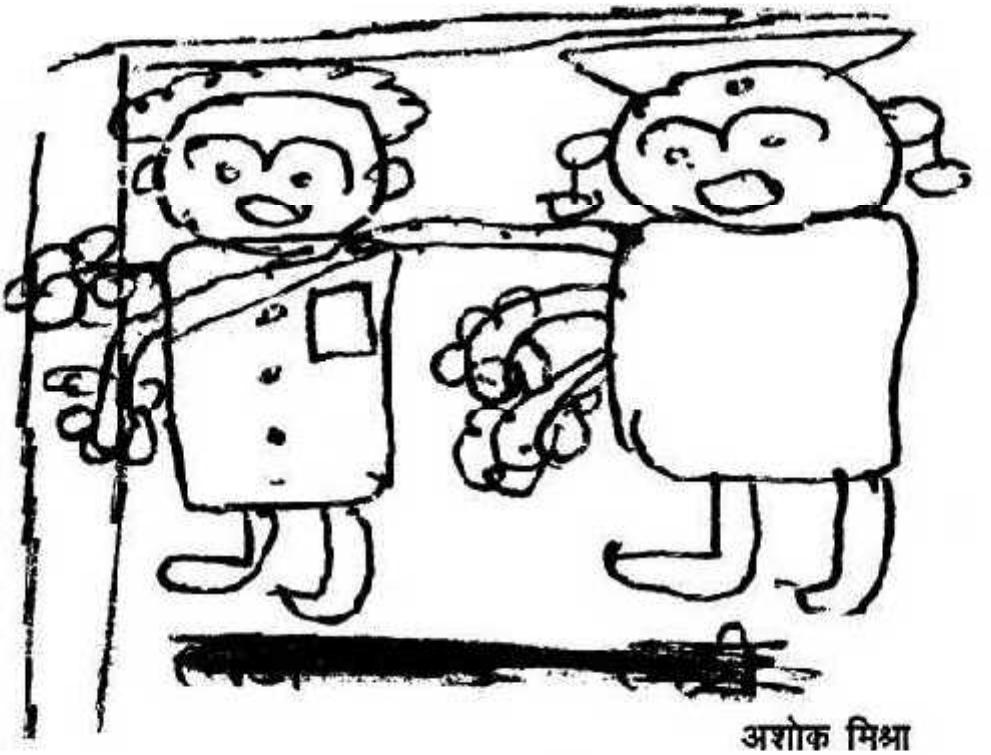

अशोक मिश्रा

अशोक कुमार, सातवीं, करवाड़िया, देवास, म.प्र.। चकमक, जुलाई 1990 में प्रकाशित। अशोक मिश्रा, दसवीं, देवास, म.प्र.।

अदल-बदल

❑ कमलेश खैरिया

गर्मियों की छुट्टी में मैं मामा की लड़की की शादी में खण्डवा गया था। मैं वहाँ थोड़ी देर घूमा, फिर बारात आ गई। हम सब दूल्हे को देखने दौड़ पड़े। फिर थोड़ी देर बाद नाश्ता करवाया गया। फिर शरबत पिलाया।

शाम को खाना खाया गया। खाने में बहुत-सी स्वादिष्ट चीज़ें बनी थीं। हमने खाना, डटकर खाया और छत पर मस्ती करने लगे।

फिर लगन (भाँवर) का समय आया। लगन में दूल्हा-दुल्हन के फेरे पड़े। दूल्हा अच्छा था। उसने कोई ज़िद नहीं की।

फिर हम सो गए। मैं जब सबेरे उठा तो पता चला मेरी चप्पल नहीं है। मैंने इधर-उधर ढूँढी पर नहीं मिली। मैं नंगे पाँव वापस आ गया। मेरे साथियों ने देखा तो एक बोला, "अरे यार तू भी किसी की चप्पल मार दे।"

मैंने कहा, "नहीं, मैं नई ख़रीद लूँगा।"

तो दूसरा बोला, "अबे रख ले पाँव जलेंगे।"

साथियों के अनुरोध पर मैंने चप्पल पहन ली। पर मैं बहुत घबराया हुआ था। मैंने आज तक ऐसा नहीं किया था।

अब दूल्हा-दुल्हन को मन्दिर ले गए। हम भी वहाँ गए। जब मन्दिर से उतरकर चबूतरे पर बैठे तो मैंने मन्दिर के बाहर अपनी चप्पल देखी। मैंने जो चप्पल पहनी थी वह उतार दी और अपनी पहन ली।

इतने में ही किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैं डर गया। जब मैंने देखा तो वह मेरा दोस्त था।

उसने कहा, "यार मेरी चप्पल गुम हो गई थी, वह यहाँ मिली। और तेरी चप्पल के पास रखी थी।"

मैंने कहा, "तेरी चप्पल मैंने पहनी थी।"

हम दोनों को अपनी-अपनी चप्पल मिल गई। ●

महेन्द्रसिंह चौहान

कमलेश खैरिया, दसवीं, भोपाल, म.प्र.। चकमक जनवरी 1989 में प्रकाशित।
महेन्द्रसिंह चौहान, पाँचवीं।

गाय ने खाया काग़ज़

❑ सौमित्र चटर्जी

पिछली छुट्टियों में मैं अपने मामा के गाँव गया था। मेरे मामा के घर के पिछवाड़े में एक कमरा है, जिसमें एक बड़ी सी खिड़की है। उस खिड़की से दूर-दूर तक फैले खेत और बागान हैं जो स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं।

एक दिन मैं उस खिड़की के किनारे बैठकर पेंटिंग कर रहा था। मैं उन खेतों-बागानों के दृश्यों को अपनी पेंटिंग-पुस्तिका में उतार रहा था। सहसा मैंने देखा कि एक गाय उस खेत में चर रही थी। तभी मेरे दिमाग़ में एक विचार कौंधा। मैंने काग़ज़ की छोटी-छोटी पत्तियाँ बनाईं। उन्हें काट कर स्केच पेन से रंग डाला। इस तरह की ढेर सारी पत्तियों को लेकर मैं गाय के पास पहुँचा। गाय अभी घास चर रही थी। जब गाय की नज़र काग़ज़ की पत्तियों पर पड़ी तो गाय उन सारी पत्तियों को खा गई।

मैं यह सोचकर बहुत खुश हुआ कि मैंने गाय को मूर्ख बनाया। जब मैंने यह बात अपने दोस्तों को बताई तो वे हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। मैंने हँसने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि गाय काग़ज़ भी खाती है। ●

सौमित्र चटर्जी, आठवीं, पटना, बिहार। हेमलता कुंजुर, सातवीं। कहानी तथा चित्र चकमक मार्च, 1991 में प्रकाशित।

हेमलता कुंजुर

आम की खोज

❑ गोपाल तिवारी

एक समय की बात है। हम लोग आन की खोज करने के लिए बगिया में गए। समय रात के दो बज चुके थे। बगिया में जाकर हम लोगों को कम से कम अस्सी आम मिले। तब हम लोग अपने-अपने घर आए। सुबह माँ ने हमसे पूछा कि इतने सारे पके हुए आम कहाँ से आए? हमने कहा कि बगिया में से हम आम लाए हैं। तब माँ डर गईं और कहने लगी कि इतनी रात को तुम बगिया में गए तुमको डर नहीं लगा। तब हमने माँ से कहा कि मैं अकेला नहीं गया था, मेरे साथ रमेश, विनोद, प्रमोद, कन्हैया भी गए थे। माँ ने सबको बुलाया और कहने लगी कि रात में तुम सब आम खोजने क्यों गए बगिया में, अब मत जाना। इसलिए कि वहाँ बहुत बड़ा साँप रहता है। तुम सब को पकड़ लेगा।

यह सब बात बताकर माँ भोजन बनाने क लिए चली गईं। तब हम सब बच्चे आपस में बात कर रहे थे कि अबकी बार बगिया में फिर चलें और वहाँ साँप होगा तो हम सब उसे मार देंगे। हम लोग यह सब बातें कर ही रहे थे कि उसी समय यह सब बातें सुनते हुए पिता जी आ गए और हम लोगों से कहने लगे कि बगिया में मत जाना।

हम लोग उसी रात को हाथ में टार्च और लाठी लेकर बगिया की ओर चल पड़े। वहाँ जाने पर भी साँप का नामो-निशान तक नहीं मिला। तब कन्हैया ने कहा कि गोपाल भैया की माँ हम लोगों को डरा रहीं थीं कि हम लोग बगिया में

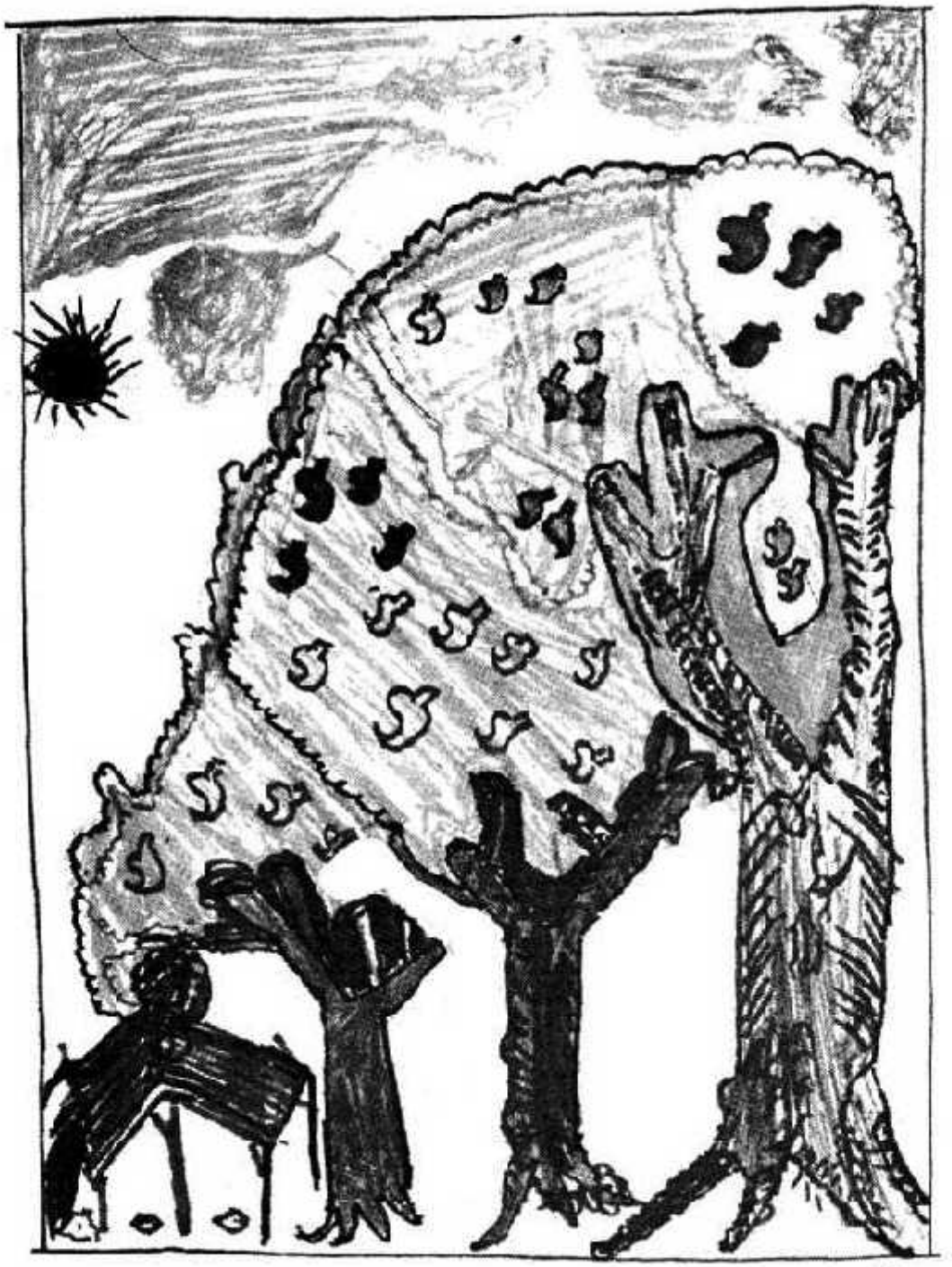

सत्यनारायण गंजीर

न जाएँ। लेकिन ऐसा थोड़े ही होगा कि हम लोग अम चुनना छोड़ देंगे? वहाँ जाकर दनादन आम चुनना शुरू किया। उस दिन भी अस्सी आन मिले। जब हम सबों के झोले भर गए तो हम सड़क की ओर से अपने घर की ओर आ रहे थे कि एकाएक बहुत-सी रोशनी हम लोग की आँख पर आई। हम लोग डरकर भागने लगे।

डकैतों का डर था। इसलिए कि हमारे गाँव में दस रोज़ पहले एक राय जी के घर में डकैती हुई थी। जब हम डर के मारे भाग रहे थे तो वो सब पीछा करने लगे। भागते-भागते अपने घर आए। हम सब इतनी ज़ोर से भागे कि आम का थैला कहाँ गिर गया कुछ पता नहीं चला।

हम लोग गाँव में आकर कहने लगे कि डकैत हमारे गाँव के आस-पास आ गए हैं। हमारे गाँव के लोग ईंटा-पत्थर लेकर तैयार थे कि डकैत यदि आ जाएँगे तो मुकाबला डटकर होगा। वे लोग हमारे घर के आस-पास आ गए और हम सब को खोजने लगे। सब शैतान लड़के कहाँ गए?

थोड़ी देर के बाद पता चला कि वो चोर नहीं पुलिस है। तब हम लोग उनके पास गए तो वे कहने लगे कि इतनी रात को तुम बगिया में क्यों गए थे? हम लोगों ने कहा के आम खोजने के लिए बगिया में गए थे। वो कहने लगे आधी रात को बगिया में मत जाना, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।

दरोगा जी कहने लगे कि यह सब लड़के इतने शैतान हैं कि हम लोग को हैरान कर दिया। दरोगा जी जब गिर पड़े थे और उनके पेट में चोट आ गई थी। तब उन्होंने कहा कि गोली चलाओ, लेकिन अच्छा हुआ कि पुलिस ने गोली नहीं चलाई।

तब दरोगा जी ने कहा कि तुमने तो हैरान कर दिया लेकिन ऐसा अब मत करना।

दरोगा जी ने कहा कि तुमने तो ख़ूब दौड़ाया अब ज़रा पानी पिलाओ। तब हमने दरोगा जी को चार ग्लास पानी पिलाया। फिर दरोगा गए दक्षिण दिशा में गश्त करने और हम अपने-अपने घर गए। तब हमारे गाँव के लोग कहने लगे कि यह सब लड़के इतने बदमाश हैं कि दरोगा जी को भी परेशान कर दिया। तब हम लोग अपने घर जाकर सो गए। ●

गोपाल तिवारी, पिरारी, बिहार। चकमक फ़रवरी, 1991 में प्रकाशित।
सत्यनारायण गंजीर, छठवीं, किरगी, राजनांदगाँव, म.प्र.।

न भूत लगा, न प्रेत

❑ नाहरसिंह पंथाल

एक बार की बात है। किसी कारण से मैंने ज़्यादा बोलना छोड़ दिया था। मेरी दीदी ने कहा कि तुझे कुछ हो गया है। मेरी दीदी मुझे लेकर एक ओझा के पास गई। ओझा ने अपनी मन्त्रों की पोथी खोली और उसमें सवा पाँच रुपया रखने के लिए कहा। मेरी दीदी ने पोथी पर रुपए रख दिए। उसने कुछ मंत्र पढ़े और मुझे दो लड्डू देते हुए बोले कि जाओ इन्हें बिना किसी से बोले किसी एकांत जगह पर फेंक दो। यदि इनको किसी ने खा लिया तो उस पर प्रेत अपना प्रभाव डालेगा। मैंने एकांत में जाकर सोचा कि देखें भूत मुझ पर कैसे प्रभाव डालता है। मैंने वे लड्डू खा लिए और दोस्तों से गपशप लगाकर घर आ गया। लेकिन मुझ पर आज तक कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ●

नाहरसिंह पंथाल, आठवीं, उखलयाना, रोहतक, हरियाणा। चकमक मई, 1991 में प्रकाशित। मंजुलता ठाकुर, छठवीं, जबलपुर, म.प्र.।

मंजुलता ठाकुर

शेर आया, चाय पीने

❑ विष्णु प्रसाद मालवीय

एक बार मैं स्टोव पर चाय बना रहा था। मेरे पीछे एक शेर आया तो उसने कहा, "भाई मैं भी चाय पीऊँगा, ज़रा ज़्यादा बनाना।"

मैंने कहा कि, "मैं चाय नहीं पिलाऊँगा क्योंकि तुम मनुष्य खाते हो।" ●

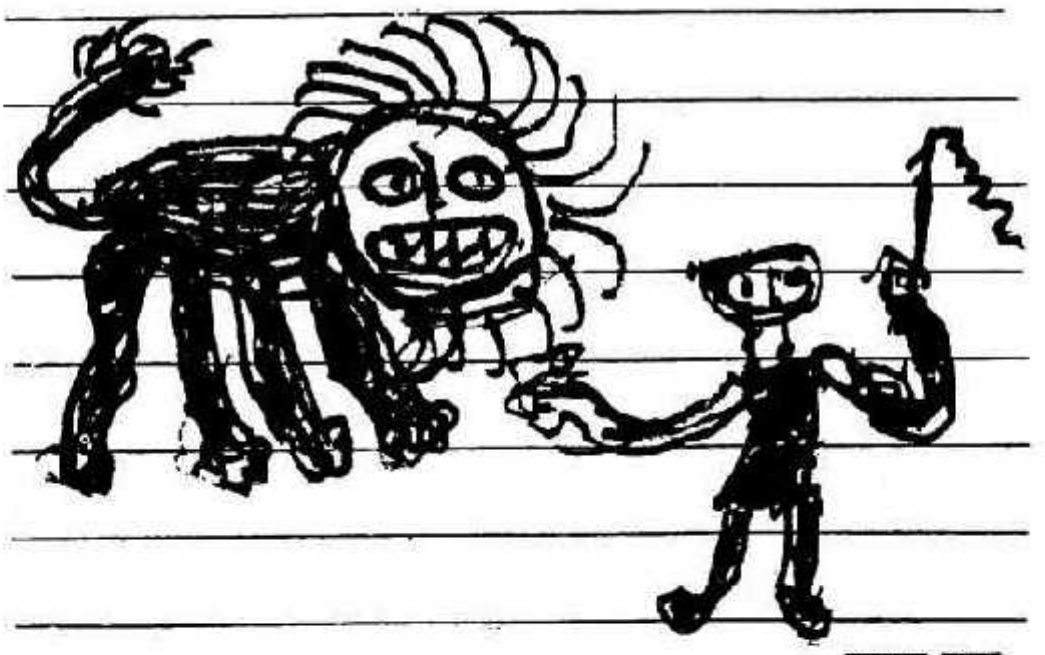

प्रकाश चन्द्र

विष्णु प्रसाद मालवीय, तेरह वर्ष, लसूड़िया राठौर, मन्दसौर, म.प्र.। प्रकाशचन्द्र, पिपल्या स्टेशन, मन्दसौर, म.प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक जुलाई, 1990 में प्रकाशित।

बैठा आस लगाए
जल्दी साल पूरा हो जाए

❑ दीपक मेहता

मेरे सब दोस्त सायकिल चलाते थे। तो मेरा भी मन होता था कि मैं भी सायकिल चलाऊँ। एक दिन मैंने मम्मी से कहा, "मम्मी मुझे भी सायकिल दिलाओ।"

मम्मी ने कहा, "तू पहले सायकिल चलाना तो सीख ले।"

मैंने कहा, "किससे सायकिल चलाना सीखूँ और कहाँ चलाऊँ? कोई भी तो नहीं सिखाता।"

मम्मी बोली, "तू अपने पापा से बात करना।"

मैंने कहा, "ठीक है, मैं अभी खेलने जा रहा हूँ।" शाम को मैं घर आया तो पापा आ गए थे।

मैंने कहा, "पापा हमें सायकिल दिलाइए।"

पापा ने कहा, "तू अभी छोटा है। तुझसे सायकिल नहीं चलेगी।"

मैंने कहा, "मेरे सभी दोस्त भी तो छोटे हैं। फिर वो कैसे सीख गए?"

पापा को हार माननी पड़ी। कहा, "अगले साल दिला दूँगा जब तू चौथी में चला जाएगा।" मैंने पापा की बात मान ली।

मुझे लगता कब जल्दी-से चौथी में आऊँ और सायकिल आए। धीरे-धीरे साल ख़त्म हुआ और मैं चौथी में चला गया। मैंने पापा से कहा, "मुझे सायकिल दिलाओ।"

लाखन सिंह

पापा ने कहा, "तू पहले किसी भी दोस्त की सायकिल चला और सीख ले।"

मैंने कहा, 'पापा आपने तो मुझसे कहा था कि तू जब चौथी क्लास में चला जाएगा तो मैं सायकिल दिला दूँगा।"

"नहीं, अभी तू एक साल और रुक जा। तू छोटा है।"

मैंने कहा, "मैं पाँचवीं में जाऊँगा तो आपको ज़रूर लानी पड़ेगी।"

पापा ने कहा, "ठीक है, पक्का सायकिल दिलाऊँगा।" मैं पाँचवीं में चला गया। मेरे पाँचवीं में जाने के बाद भी दो-तीन महीने बीत गए। मैंने बहुत ज़िद पकड़ ली और पापा को सायकिल लानी पड़ी। अब सायकिल तो आ गई मगर सिखाने वाला कोई नहीं था।

मैं बहुत दिन तक अपने मन से धीरे-धीरे चलाता और थोड़ी दूर जाकर रुक जाता। मुझे डर था कि कहीं गिर न जाऊँ। मैंने मम्मी को बताया। मम्मी ने कहा, "पुलिस ग्राउंड में जाकर चला, वहाँ गिरेगा तो लगेगी भी नहीं।"

मैंने कहा, "ठीक है।" मैं पुलिस ग्राउंड में सायकिल लेकर गया। वहाँ मैंने सायकिल तो चलाई मगर ब्रेक नहीं लगा। मैं गड्ढे में गिर गया। मेरे पाँव में लग गई। फिर धीरे-धीरे मेरे को सायकिल चलाना आ गई। ●

दीपक मेहता, पाँचवीं, देवास, म.प्र.। चकमक दिसम्बर, 1991 में प्रकाशित।
लाखन सिंह, तेरह वर्ष, लसूड़िया राठौर, मन्दसौर, म.प्र.। चकमक अप्रैल, 1991 में प्रकाशित।

मन भर चीनी खाई

❑ अनीता कुमारी

चीनी खाने में बहुत अच्छी लगती है। इसलिए मैं बहुत चीनी खाती थी। जब कभी भी माँ रसोईघर से इधर-उधर होती कि मैं झट से चीनी खा लेती।

माँ जब कभी भी मुझे चीनी खाते देखती, बहुत समझाती थी कि इतनी चीनी नहीं खानी चाहिए। अधिक चीनी खाने से पेट में कीड़े हो जाते हैं।

मैं माँ की बात नहीं मानती थी। छुप-छुपकर चीनी खाने में बहुत मज़ा भी आता था।

एक दिन किसी काम से माँ और पिताजी को बाहर जाना पड़ा। माँ जाते समय मुझे कह गई कि, देखो मैं दो घण्टे बाद आऊँगी। तुम बाहर कहीं नहीं जाना और दरवाज़ा बन्द करके घर में रहना।

उनके जाते ही मैंने बाहर का दरवाज़ा बन्द कर लिया। मैं घर में अकेले हो गई। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ! अचानक मुझे चीनी की याद आ गई। उस दिन मैंने इतनी चीनी खाई कि मेरा मन भर गया। ●

अनीता कुमारी, आठवीं, सालीमपुर अहरा, पटना, बिहार। चकमक सितम्बर, 1991 में प्रकाशित। रईस खान, पीथमपुर, धार, म.प्र.

रईस खान

पतंग की करामात

❑ निकोलस बर्न

एक बार मैं पतंग उड़ा रहा था। अचानक मेरी पतंग बहुत-बहुत दूर चढ़ गई। मेरी पतंग चाँद में अटक गई थी, अब क्या! तब आसमान में दो आदमी चढ़े थे। और वे नीचे नहीं आ पा रहे थे। भूल से वे दोनों मेरी पतंग पर बैठ गए। मैंने एक झटका मारा, तो वे दोनों मेरी पतंग के साथ नीचे आ गए। ●

भाष्कर

निकेलस बर्न, पाँचवीं, हरदा, म.प्र.। चकमक सितम्बर, 1989 में प्रकाशित।
भाष्कर, चार वर्ष, जयपुर, राजस्थान

फूल

❑ सत्य प्रकाश सिंह

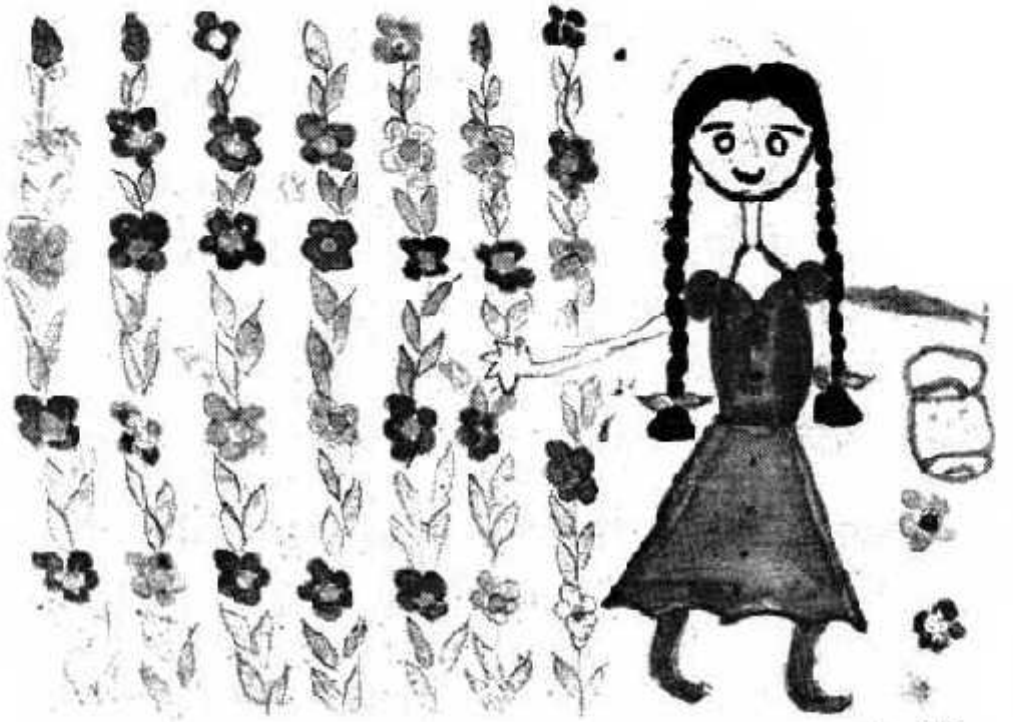

दीपाली सोनी

एक बार मीनू फूल लेने जा रही थी। उसके घर में पूजा थी। तभी रास्ते में पेड़ पर चिड़ियों का चहचहाना सुनकर रुक गई और उस पेड़ के नीचे बैठ गई। उसे वहाँ बैठना अच्छा लग रहा था।

वह बहुत देर तक वहाँ बैठी रही। तभी उसे फूल की बात याद आई। वह जल्दी-जल्दी फूल तोड़कर घर पहुँची। घर पहुँचने पर उसने देखा कि पूजा समाप्त हो चुकी है। ●

सत्यप्रकाश सिंह, दूसरी, आरंग, रायपुर, म.प्र.। चकमक जुलाई, 1991 में प्रकाशित। दीपाली सोनी, सातवीं, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.।

धमबम, छमबम और हम

❑ राजेन्द्र कुमार

एक समय की बात है। हम तीन मित्र रोज़ सबेरे व्यायाम करने जाते थे। हम तीनों मित्रों के नाम थे। धमबम, छमबम और हम।

एक दिन हम तीनों ने सोचा कि आज अपन लोग शाम को बगीचे की तरफ़ घूमने जाएँगे। फिर हम तीनों शाम को बगीचे की तरफ घूमने के लिए चल पड़े। वहाँ पर बहुत बड़े-बड़े पेड़ थे। जैसे आम, पीपल, इमली, सगौना, कुहाँ, बबूला आदि।

धमबम बोला, "मित्र हमको तो बहुत डर लगता है। हम तो नईं जाएँ।"

छमबम बोला, "अरे डरपोक तू गजब करत है, अरे, भय को भूत, लहर को जाड़ो; जब देखो जब आगे ठाड़ो।"

हम बोले, "हाँ सच है ये बात।"

फिर ऐसा सोचकर तीनों चल दिए, बगीचे के भीतर की ओर। तो उस बगीचे में गड़बड़ ठाकुर लुका था। उस ठाकुर ने हमको डरवाने कि कोशिश की। वह हाऊ-हाऊ कहने लगा। धमबम बहुत डरता था। उस आवाज़ को सुनकर वह डर गया। हमने सोचा कि सचमुच भूत है। छमबम ने कहा, "अरे मित्र घबराओ मत हम निपट लेंगे।"

फिर गड़बड़ ठाकुर हमरे पास आ गया। फिर हमने उससे कहा, "क्यों रे हमको क्यों डराता है।"

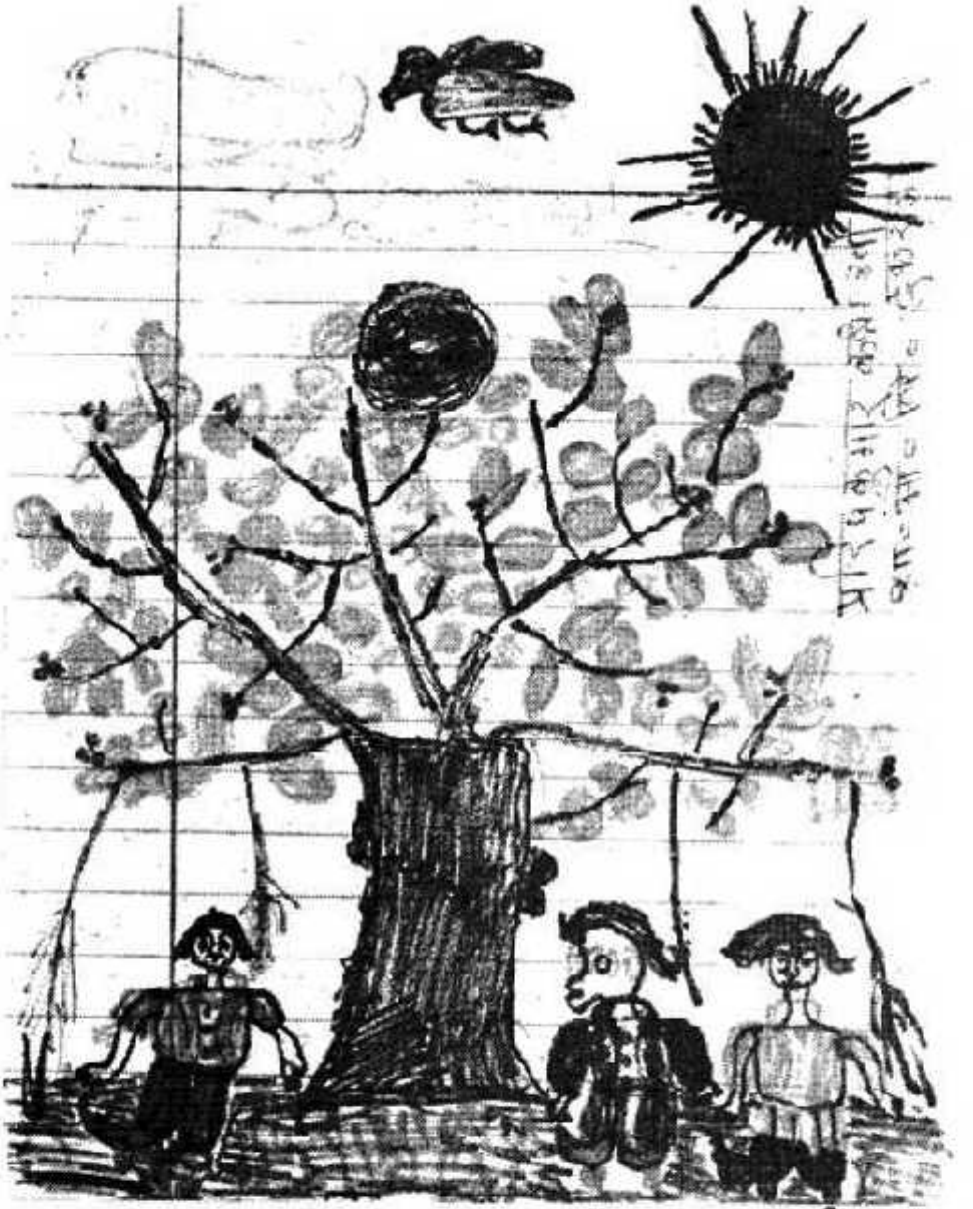

प्रदीप कुमार

और फिर हम तीनों उससे लड़ पड़े। हमने उसको ख़ूब नारा। फिर हम घर आ गए। ●

राजेन्द्र कुमार, आठवीं, सुरेलारंधीर, पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.। चकमक मार्च, 1990 में प्रकाशित। प्रदीप कुमार, आठवीं, टुकराल, उज्जैन, म.प्र.।

पागल कुत्ते से सामना

❑ पुष्पराज नारायण

यह कहावत शत-प्रतिशत ठीक है कि अगर आदमी शेर से न डरे तो शेर पालतू कुत्ता। बात ऐसी है कि गर्मी के दिन थे। आम पक पक के गिर रहे थे। मैं आम खाने बगीचा गया था। मैं एक आम के नीचे गया। वहीं एक पागल कुत्ता खड़ा था और मैं नहीं जानता था कि ये पागल कुत्ता है। बस गाँव में ये हल्ला था कि कहीं से एक पागल कुत्ता आ गया है, जो रोज़-रोज़ कोई न कोई दुर्घटना करता रहता है। मैं निश्चिंत होकर आम खाने लगा।

मेरी नज़र उस कुत्ते पर पड़ी। मैं उसे ध्यान से देखने लगा। उस कुत्ते में मुझे पागल कुत्ते के सभी लक्षण दिखने लगे। जैसे-जैसे उसके मुँह से लार अधिक मात्रा में निकल रही थी और वह अपने गिरी हुई लार को चाट रहा था। मैं समझ रहा था कि हो न हो यही पागल कुत्ता है।

तभी दूर से किसी लड़के की आवाज़ आई, "भागो पुष्पराज, वो पागल कुत्ता है।" मैं भागने को हुआ कि कुत्ता मेरी तरफ बढ़ने लगा। मैंने कहीं पढ़ा था कि 'अगर कोई शेर से न डरे तो शेर पालतू कुत्ता'। यही सोचकर मैंने भागना बन्द कर दिया और खड़ा हो गया। कुत्ता मेरे पास आ गया। कुत्ता जब मेरी तरफ झपटा तो मैंने कुत्ते का गला कसकर पकड़ लिया और उसे घुमाने लगा। एक-दो राउंड घुमाकर मैंने कुत्ते को फेंक दिया। कुत्ता ज़मीन पर गिरते ही दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। उधर वो भागा और इधर मैं घर की तरफ दौड़ा। फिर मैंने घर आकर ही दम लिया। ●

कीर्ति चौहान

पुष्पराज नारायण, शहडोल, म.प्र.। कीर्ति चौहान, चार वर्ष, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक अगस्त, 1989 में प्रकाशित।

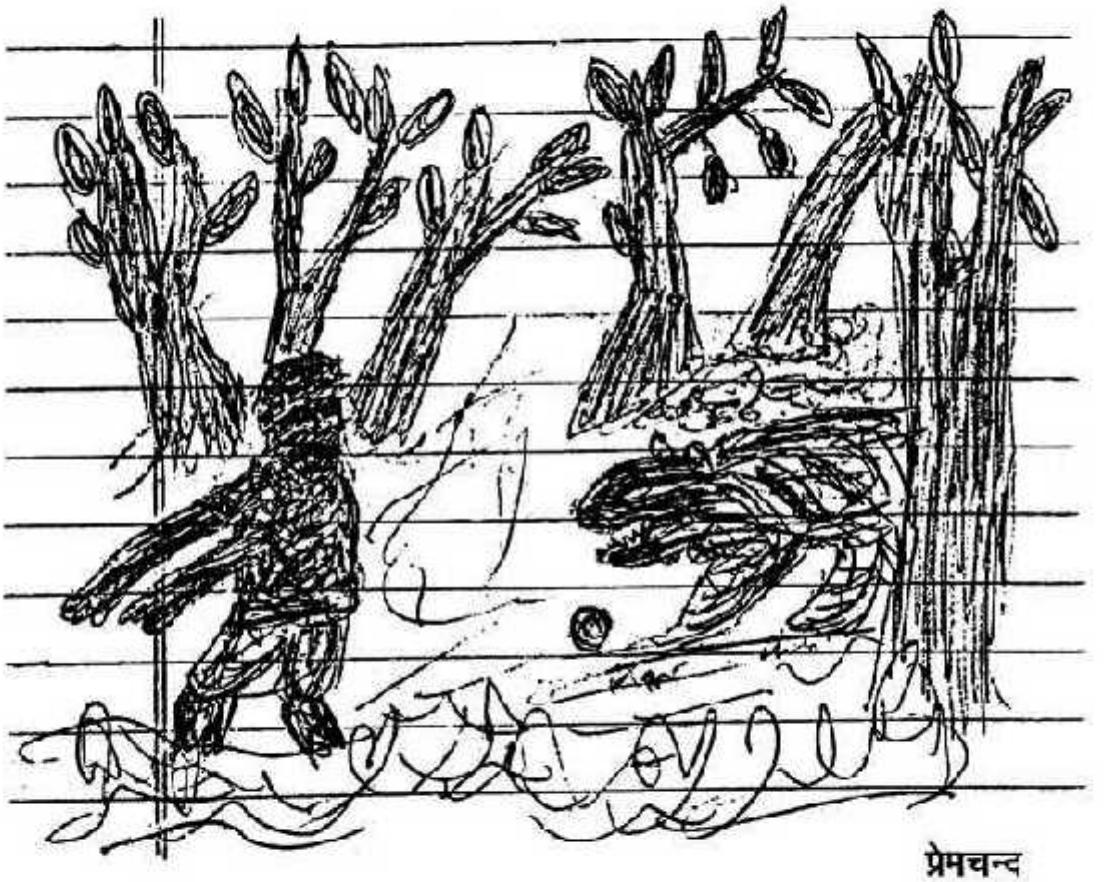

प्रेमचन्द

शेर से दोस्ती

❑ रीतू सिन्हा

मैं और मेरी सहेली बीटू एक दिन जंगल में घूमने गईं। तभी अचानक हम दोनों ने एक शेर को देखा। शेर को देखकर हम दोनों डर गए और भागने लगे। शेर हमारा पीछा करने लगा तो हम दोनों एक पेड़ पर चढ़ गईं। तभी शेर वहाँ आ पहुँचा।

शेर गुर्रा रहा था। मैं हिम्मत कर बोली, 'शेर दादा, तू हम दोनों को क्यों परेशान करता है? तू हमसे दोस्ती कर ले।'

शेर ने कहा, 'ठीक है, बच्चे मुझे भी प्यारे लगते हैं।'

तब हम दोनों ने शेर से दोस्ती कर ली। ●

रीतू सिन्हा, आठ वर्ष, बगैन, भोजपुर, बिहार। चकमक अगस्त, 1991 में प्रकाशित। प्रेमचन्द, आठवीं, विकलना, रतलाम, म.प्र.। चकमक फ़रवरी, 1990 में प्रकाशित।

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य, जो एक स्वैच्छिक संस्था है, पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं। स्कूली शिक्षा में नए प्रयोगों का काम माध्यमिक कक्षाओं में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से शुरू हुआ था और उनका विस्तार सामाजिक अध्ययन विषयों के साथ-साथ प्राथमिक कक्षाओं में भी हो गया है।

इस काम का मुख्य उद्देश्य है एक ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। इस काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को घर में या स्कूली समय से बाहर भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, जिनमें किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

इसी मंशा से एकलव्य ने पिछले वर्षों में ग्रामीण इलाकों में बच्चों के लिए पुस्ताकालय खोले हैं, चकमक क्लब बनाए हैं। स्थानीय स्तर पर बच्चों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली बाल पत्रिकाओं बालकलम, उड़ान आदि को प्रोत्साहित किया है।

जुलाई, ९5 से नियमित रूप से प्रकाशित चकमक पत्रिका भी इसी काम का एक हिस्सा है।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। *चकमक* के अतिरिक्त *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी फीचर) तथा *सन्दर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

वर्तमान में एकलव्य म.प्र. में भोपाल के अतिरिक्त होशंगाबाद, हरदा, पिपरिया, देवास व उज्जैन में स्थित केन्द्रों तथा शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिंदवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।

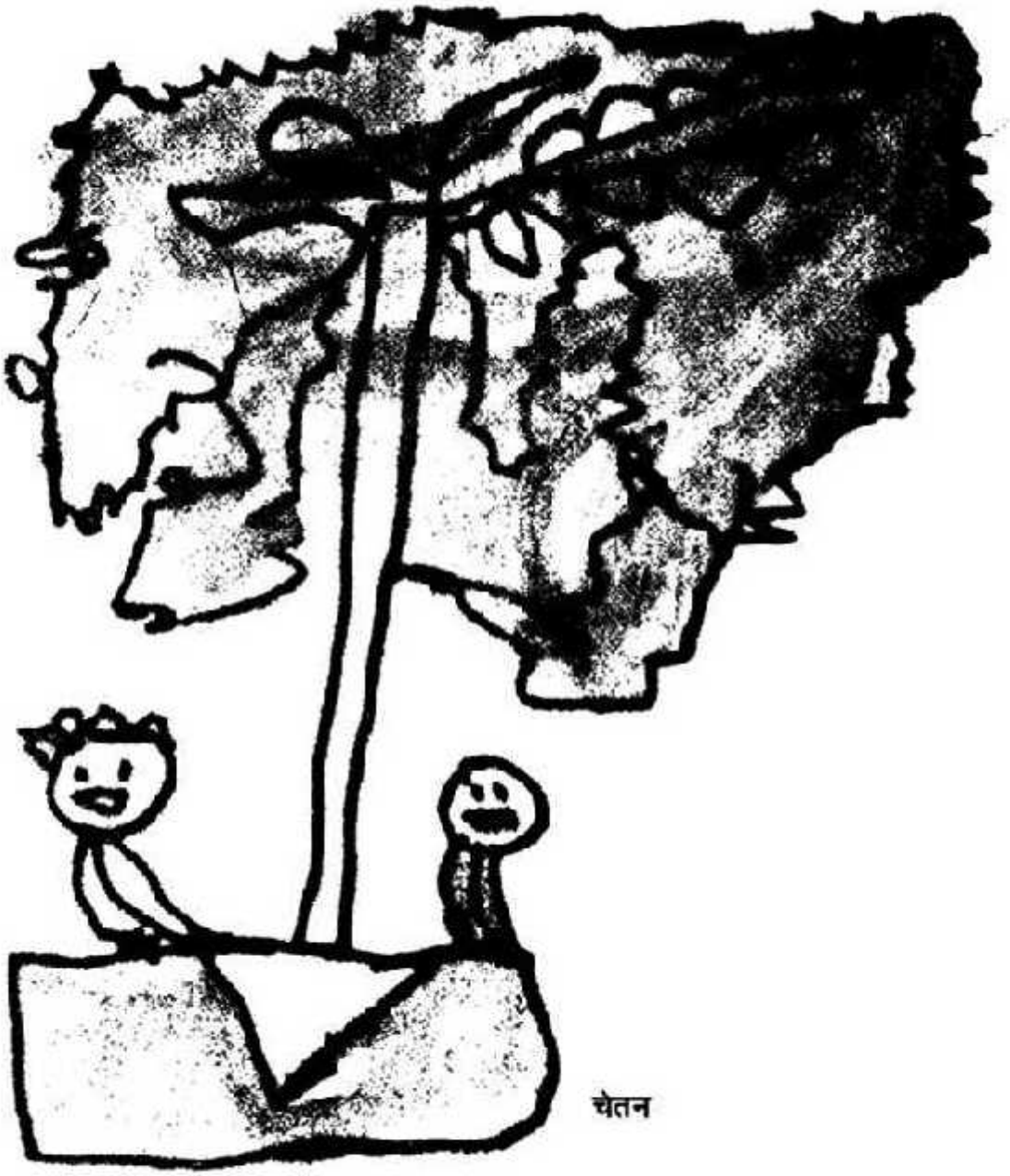

चेतन, कन्नौद, देवास, म.प्र.। चकमक दिसम्बर, 1990 में प्रकाशित।

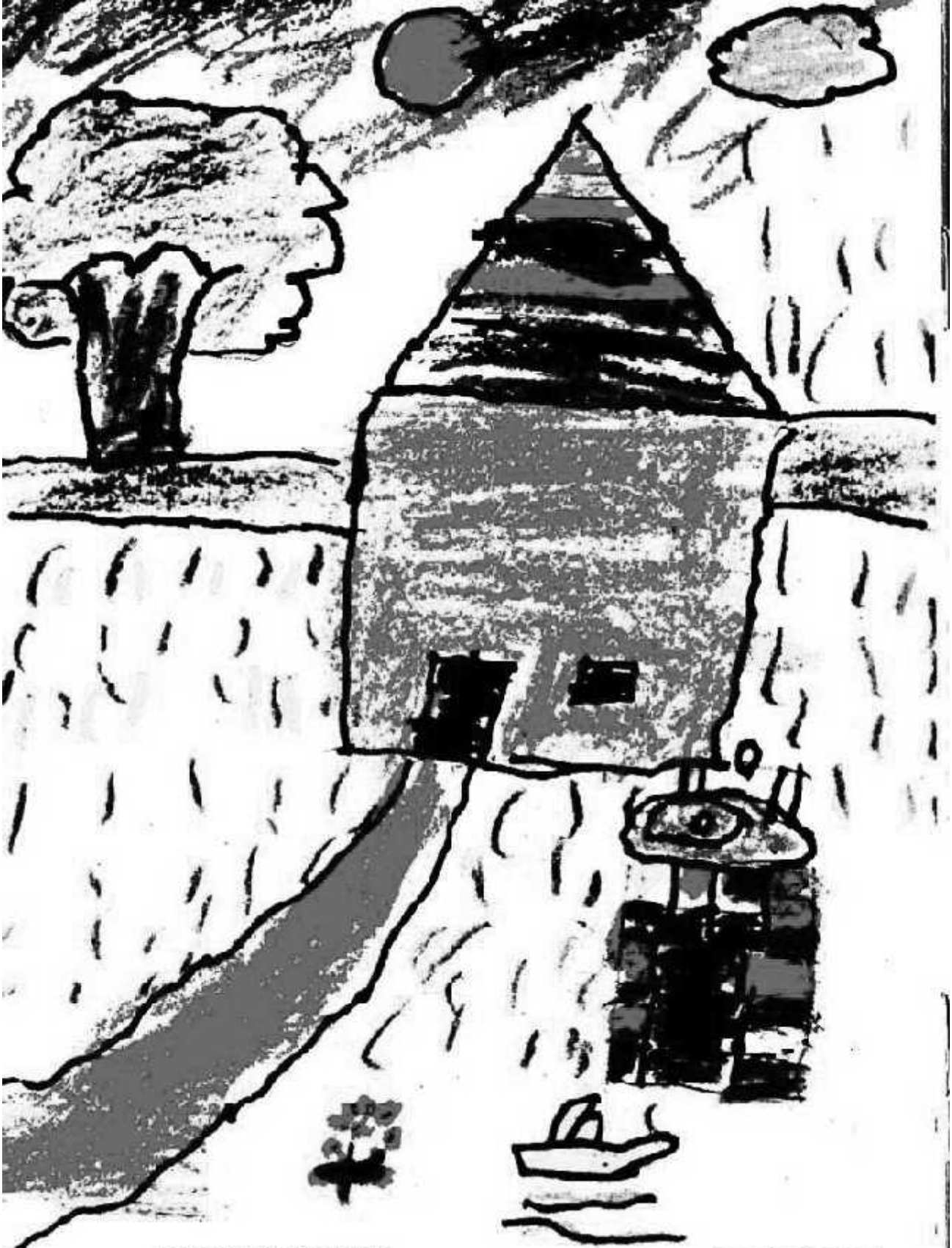

ISBN: 978-81-87171-12-6

मूल्य: 22.00 रुपए